

Press Release

Sahitya Akademi Organises Face-to-Face and “Bal Sahiti: Contemporary Scenario of Children’s Literature” Programmes at New Delhi World Book Fair 2026

New Delhi, 18 January 2026: On the final day of the nine-day-long New Delhi World Book Fair 2026, Sahitya Akademi hosted two significant literary sessions: “Face-to-Face” and “Bal Sahiti: Contemporary Scenario of Children’s Literature”—at Hall No. 2, Bharat Mandapam, Pragati Maidan, New Delhi.

In the Face-to-Face programme, veteran Hindi author and Sahitya Akademi Bal Sahitya Puraskar awardee Smt. Kshama Sharma reflecting on her literary life, she spoke about her habit of immediately noting down ideas as they occur to her. She recalled that a nurturing literary environment at home and strong encouragement during her childhood enabled her to publish her first article at the age of 18. She also read out her story “Eco-friendly”, which deals with the interference of large corporates in the field of journalism. Renowned Nepali writer Sri Diwakar Pradhan spoke on the irony of the use of modern expressions of emotion on social media without an understanding of their literary or cultural appropriateness. He elaborated on the expression “RIP”, commonly used on the demise of a person in Abrahamic faiths, and contrasted it with the Indian philosophical concept of karma, where death is viewed not as an end, but as a transition or change of the physical body.

This was followed by a symposium titled “Bal Sahiti: Contemporary Scenario of Children’s Literature,” chaired by noted poet and children’s writer Sri Divik Ramesh. The panel comprised Sri Om Prakash Kashyap, Sri Rajnikant Shukla, Sri Rishi Raj, and Sri Suryanath Singh, who examined current trends and challenges in children’s literature. From the Chair, Sri Divik Ramesh remarked that true children’s literature is written for children, not merely about them. Sri Om Prakash Kashyap traced the evolution of children’s literature from Western beginnings to contemporary Indian writing. Sri Rajnikant Shukla stressed the importance of cultural roots and noted the lack of a common platform for children’s literature beyond Hindi. Sri Rishi Raj highlighted its role in nurturing sensitivity, while Sri Suryanath Singh observed the growing availability of books for all age groups, from infants to teenagers.

Both programmes were compered by Sri Ajay Kumar Sharma, who thanked the participants and the audience on behalf of the Sahitya Akademi.

- Pallavi Prashant Holkar

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य मनुष्य को जोड़ता है, तोड़ता नहीं - दिविक रमेश

बाल साहित्य की वर्तमान स्थिति पर हुई चर्चा

नई दिल्ली, 18 जनवरी 2026 साहित्य अकादेमी द्वारा नई दिल्ली विधि पुस्तक मेले में प्रतिदिन किए गए कार्यक्रमों की शृंखला का अंतिम दिन बाल साहित्य पर गंभीर चर्चा का रहा। 'आगने-सागने' कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार प्राप्त क्षमा शर्मा एवं प्रख्यात नेपाली लेखक और विद्वान दिवाकर प्रधान ने श्रोताओं के समक्ष अपनी रचना-प्रक्रिया साझा की, साथ ही अपनी रचनाओं का पाठ भी किया। 'बाल साहिती' कार्यक्रम के अंतर्गत 'बाल साहित्य की वर्तमान स्थिति' पर हुई परिचर्चा की अध्यक्षता प्रख्यात कवि और लेखक दिविक रमेश ने की और अन्य वक्ता थे - बाल साहित्यकार ओमप्रकाश कश्यप, रजनीकांत शुक्ल, ऋषि राज और सूर्योनाथ सिंह।

'आगने-सागने' कार्यक्रम में साहित्यकार क्षमा शर्मा ने अपनी रचना-प्रक्रिया के बारे में बताते हुए कहा कि मेरे लेखक होने का श्रेय मेरे परिवार, विशेषतया बड़े भाई को है, जिन्होंने मुझे पढ़ने-लिखने का संस्कार दिया। अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष पर मेरे द्वारा लिखा लेख जिसे मैंने डाक से भेज दिया था, जो 'अमर उजाला' में प्रकाशित हुआ और यही मेरे जीवन का टर्निंग पॉइंट था। इसी के बाद मुझे लगा कि मैं लिख सकती हूँ। रसोई घर में काम करते हुए जब भी मुझे विचार आता है, तो उसे पर्ची में लिख लेती हूँ। यात्रा के दौरान भी डायरी में अपने मन के भावों को उतारती रहती हूँ। उन्होंने केरल के पाठ्यक्रम में शामिल कहानी 'इको फ्रेंडली' प्रस्तुत की, जो जल प्रदूषण पर आधारित थी।

नेपाली के प्रख्यात लेखक दिवाकर प्रधान ने अपनी रचना-प्रक्रिया के बारे में बताते हुए कहा कि मैं मूल रूप से साहित्य दर्शन और इतिहास दर्शन पर लिखता हूँ। मैंने सनातन संस्कृति और भारत के सौंदर्य शास्त्र पर अधिक लेखन किया है। उन्होंने श्रोताओं के समक्ष 'रिप' निबंध प्रस्तुत किया। इस निबंध के माध्यम से उन्होंने विविध धर्मों द्वारा मृत्यु के बाद की धार्मिक मान्यताओं और परंपराओं का विस्तार से उल्लेख किया।

'बाल साहित्य की वर्तमान स्थिति' पर चर्चा के दौरान कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात कवि और लेखक दिविक रमेश ने कहा कि बाल साहित्य का प्रकाशन व्यवस्थित ढंग से होना चाहिए। साहित्य कभी मनुष्य को तोड़ता नहीं, बल्कि जोड़ता है। बाल साहित्य की शुरुआत बच्चों को सीखने-सिखाने के उद्देश्य से की गई। बंगाल में धारणा है कि जो साहित्यकार बच्चों के लिए नहीं लिखते वे साहित्यकार नहीं हैं। ओमप्रकाश कश्यप ने 'जवाहर की चिट्ठी', 'उडान' आदि पुस्तकों का उल्लेख करते हुए कहा कि साहित्य का काम ज्ञान देना नहीं, बल्कि उनकी रचनात्मकता को उजागर करना है, उन्हें ऊर्जावित करना है। रजनीकांत शुक्ल ने कहा कि अन्य साहित्य की तरह बाल साहित्य की भी कोई पत्रिका विभिन्न भारतीय भाषा का प्रतिनिधित्व करते हुए निकलनी चाहिए। ऋषि राज ने कहा कि बाल साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं है बल्कि यह बच्चों को संवेदनशील बनाने का सबसे बड़ा हथियार है। उन्होंने जलियाँवाला बाग हत्याकांड, कारगिल युद्ध आदि पर अपनी रचनाओं पर बात करते हुए कहा कि जो दर्द हमारे बुजुर्गों, हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने सहे हैं, उसे हमें हमेशा याद रखना चाहिए, खासकर हमारी युवा पीढ़ी को इसे विस्मृत नहीं करना चाहिए। सूर्योनाथ सिंह ने कहा कि इस समय बाल साहित्य की स्थिति बहुत अच्छी है। उन्होंने यह भी कहा कि सुदर्शन ने 'हार की जीत', ग्रेगरिन ने 'पंच परमेश्वर' आदि रचनाएँ बच्चों के लिए सोचकर नहीं लिखी थीं। आज हर आयु वर्ग के बच्चों के लिए लिखा जा रहा है। किशोरों के लिए वैज्ञानिक कहानियाँ लिखी जा रही हैं। कार्यक्रमों का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन अजय कुमार शर्मा ने किया।

- पल्लवी प्रशांत होल्डकर